श्रीभर्तृहरिविरचितम्

नीतिशतकम्

(अन्वय-पदार्थ-व्याख्या-भावार्थ-भाषार्थ-सहितम्)

संस्कर्ता:
जनार्दनशास्त्री पाण्डेयः
एम०ए०, साहित्याचार्यः

मोतीलाल बनारसीदास
दिल्ली, मुम्बई, चेन्नई, कोलकाता,
बंगलूरू, वाराणसी, पटना

विषय-सूची

	विषय	पृष्ठ
१	गुणग्राहकोंका अभाव	१
२	अधूरा ज्ञान कष्टकर होता है	२
३	मूर्खको संतुष्ट नहीं किया जा सकता	२
४	दुर्जनोंको सन्मार्गपर लाना कठिन है	४
५	मूर्खोंके लिये मौन रहना श्रेयस्कर है	५
६	विद्वानोंके संगसे वास्तविकताका ज्ञान	६
७	नीचकी नीचता	७
८	विवेकहीनोंका पतन	८
९	मूर्खताका कोई परिहार नहीं होता	९
१०	मनुष्यरूपमें पशु	१०
११	मूर्खोंका संसर्ग त्याज्य है	१२
१२	विद्वानोंका आदर करना चाहिये	१२
१३	विद्वानोंको धनसे वशमें नहीं किया जा सकता	१४
१४	विद्वानोंके गुणोंका अपहरण नहीं होता	१५
१५	वाणी सबसे बड़ा आभूषण है	१६
१६	विद्याकी महिमा	१७
१७	विद्याके प्राधान्यकी उदाहरणों द्वारा पुष्टि	१८
१८	सत्सङ्गकी महिमा	२१
१९	कवियोंकी महिमा	२१
२०	भगवत्कृपाका फल	२२
२१	कल्याणका मार्ग	२३
२२	अधम-मध्यम और उत्तमका अन्तर	२४
२३	सज्जनताको निभाना कितना कठिन है	२५
२४	सज्जन अपनी महत्ताको नहीं खोते	२६
२५	फलकी आकांक्षा भी पुरुषार्थके अनुरूप होती है	२७
२६	उत्तम-अधमका निदर्शन	२८
२७	जन्मका साफल्य	२९
२८	मनस्वीकी दो गतियाँ	२९
२९	महान्‌का वैर भी महान् से होता है	३०
३०	महत्ताका परिमाप नहीं होता	३१
३१	औचित्यका विचार होना चाहिए	३२
३२	तेजस्वी अपमान नहीं सह सकते	३३
३३	तेजस्वितामें अवस्था कारण नहीं	३३
३४	धनकी महिमा	३४
३४	कौन किससे नष्ट होता है	३६
३५	धनकी तीन दशाएँ	३७
३६	दान करके गरीब होनाभी गौरव है	३८
३७	परिस्थितिके अनुसार ही वस्तुका लाघव या गौरव होता है	३९
३८	प्रजा पालनसे ही सर्वार्थसिद्धि	४०
३९	राजनीतिकी वेश्यासे तुलना	४१
४०	राजाओंके छ गुण	४१
४१	भाग्यके अनुसार ही धन मिलता है	४२
४२	महान् व्यक्ति प्रार्थनाकी प्रतीक्षा नहीं करते	४३
४३	जिस किसीके सामने दीनता प्रकट करना उचित नहीं	४४
४४	दुर्जनका लक्षण	४५
४५	दुर्जनकी त्याज्यता	६०

	विषय	पृष्ठ
४६	दुर्जनों द्वारा गुणोंमें दोषत्वारोप	६१
४४	हेय और उपादेयका उपदेश	६२
४५	क्रोधसे हानि	४९
४६	सेवककी कठिनता	५०
४७	खलों एवं सज्जनोंकी मैत्रीमें अन्तर	५२
४८	अकारणवैरी	५२
४९	वन्दनीय सज्जनोंके लक्षण	५३
५०	महापुरुषोंका लक्षण	५४
५१	सज्जनताका काठिन्य	५५
५२	महापुरुषोंके स्वाभाविक अलंकरण	५६
५३	सज्जनोंकी विलक्षणता	५७
५७	संगतिके अनुसार गुणोंकी उत्पत्ति	५७
५८	बड़े पुण्योंसे प्राप्त होनेवाले पदार्थ	५८
५९	आश्रय एकका ही करना चाहिए	५९
६०	अभिनन्दनीय सज्जन	६०
६१	परोपकारियोंका स्वभाव	६१
६२	वास्तविक आभूषण	६२
६३	सन्मित्रका लक्षण	६२
६४	सज्जनोंकी प्रेरणा आवश्यक नहीं	६३
६५	मनुष्योंकी चार श्रेणियाँ	६४
६६	सज्जनोंकी मैत्रीका दृष्टान्त	६५
६७	महान्‌की महत्ता	६६
६८	सज्जनोंके लक्षण	६७
६९	महापुरुष प्रायः दुर्लभ होते हैं	६८
७०	गुणवान् ही प्रशंसार्ह है	६९
७१	धीरजन निर्धारित कार्यको पूर्ण ही करते हैं	७०
७२	मनस्वी व्यक्ति कार्यसिद्धिके लिए सुख-दुख नहीं गिनते	७०
७३	शील ही सर्वोत्कृष्ट भूषण है	७१
७४	धीर पुरुष न्यायमार्गसे विचलित नहीं होते	७३
७५	भाग्य ही मनुष्योंकी उन्नति अवनतिमें कारण है	७३
७६	महान् शत्रु और उत्कृष्ट बन्धु	७४
७७	दुःखके बाद सुख अवश्य आता है	७५
७८	पुरुषार्थसे भाग्यकी बलवत्ता	७६
७९	विचारपूर्वकही कार्य करना चाहिए	७७
८०	भाग्यहीनके लिए सर्वत्र विपत्ति ही है	७७
८१	पुनः भाग्यकी बलवत्ताका निदर्शन	७८
८२	अनुचितकारी विधाता	७९
८३	भाग्यरेखा कोई नहीं मेट सकता	८०
८४	कर्मकी महिमा	८१
८५	पूर्व सुकृत ही रक्षा करते हैं	८४
८६	सत्कर्मकी करणीयता	८५
८७	अविचार पूर्वक किए गये कार्यका परिणाम	८६
८८	सत्कर्मसे विमुख होना मूर्खता है	८६
८९	अनहोनी होती नहीं, होनी टलती नहीं	८७
९०	पूर्व सुकृतोंसे सर्वत्र अनुकूलता होती है	८८
९१	लाभ आदिकी वास्तविकताका निदर्शन	९०
९२	सत्पुरुष कहीं कहीं मिलते हैं	९०
९३	धीरका धैर्य नहीं छूटता	९१
९४	धीरकी महिमा	९२
९५	शूरका महत्व	९२
९६	शीलकी महिमा	९३
९७	दृढ़ प्रतिज्ञकी महिमा	९४

—०—